मनोविज्ञान एक नवीन विषय है। इसका इतिहास लगभग 130 वर्ष पुराना है। जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में इसकी पहली प्रयोगशाला स्थापित हुई। तब से अब तक यह अनेकों पड़ावों को पार करता हुआ अपनी अनेक शाखाएँ विकसित कर चुका है। इसके लक्ष्य निर्धारित किए जा चुके हैं विषय-विस्तार या क्षेत्र निश्चित किया जा चुका है और अध्ययन की नई-नई विधियाँ विकसित की जा चुकी है।

मनोविज्ञान का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ। सन् 1879 ईसवी की घटना है। जर्मनी के एक विद्वान विल्हेम वुण्ट ने वहीं के लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला स्थापित की। यही प्रयोगशाला मनोविज्ञान की जन्मस्थली कही जाती है और विल्हेम को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।

वुण्ट के पहले मनोविज्ञान तो था, पर वह दर्शनशास्त्र में समाहित था । यदि हम प्राचीन दार्शनिक विचारों पर ध्यान दें तो पता चलता है कि ईसा के लगभग चार सौ वर्ष पूर्व ग्रीस के दार्शनिकों ने मनुष्य के अनुभवों और व्यवहारों की व्याख्या 'आत्मा' के आधार पर की। उस समय के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो, अरस्तू आदि के विचारों में मनोविज्ञान की झलक मिलती है।

प्लेटों ने विचारों के साथ मन का तादात्म्य स्थापित किया। विचारों की व्याख्या करते हुए उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि विचार अभौतिक होते हैं तथा भौतिक शरीर से अलग उनका स्वतंत्र अस्तित्व है। यानी, प्लेटों के अनुसार, शरीर और मन का समानान्तर अस्तित्व है, ये दोनों एक-दूसरे से अलग है।

अरस्तू ने शरीर और विचारों के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि विचारों का शरीर से अलग कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, बल्कि विचार शरीर के ही कार्य-मात्र है। अरस्तू के अनुसार, विचार की उत्पत्ति प्राणी पर वातावरण के प्रभाव के फलस्वरूप होती है। वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाएँ ज्ञानेद्रियों को प्रभावित करती है और यह प्रभाव मनुष्य के हृदय तक पहुँचकर विचारों की सृष्टि करता है। यानी, हृदय पर पड़े हुए प्रभाव के परिणामस्वरूप ही विचार उत्पन्न होते हैं।

दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत रहते हुए भी मनोविज्ञान को यूनानी दार्शनिकों ने स्वीकार किया तथा इसे आत्मा का विवेचन करने वाला विषय माना। सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में फ्रांसीसी दार्शनिक डेकार्टे ने प्राणी की अनुभूति और उसके व्यवहार की व्याख्या स्नायुमण्डल, ज्ञानेन्द्रियों तथा मांस-पेशियों की क्रियाओं के आधार पर की। उन्होंने बताया कि प्राणी एक ऐसी जटिल यन्त्र-रचना है जो प्रकाश आदि बाहय भौतिक उत्तेजनाओं से ही क्रियाशील हो उठता है। उसमें क्रियाशीलता लाने के लिए किसी अभौतिक पदार्थ की आवश्यकता नहीं पड़ती। डेकार्ट ने स्नायुमण्डल के आधार पर अनुभूति और व्यवहार की व्याख्या करते हुए मनुष्य में आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया था।

डेकार्ट ने मनोविज्ञान को आनुभविका विज्ञान बनाने की कोशिश की। उन्होंने भी मन तथा शरीर को एक-दूसरे से भिन्न माना, परन्तु यह बताया कि इन दोनों का पारस्परिक प्रभाव मस्तिष्क के एक खास बिन्दु पर पड़ता है जिसे पीनियल ग्रन्थि' कहते हैं।

मनोविज्ञान में वुण्ट के विचारों के आगमन के पूर्व तक इसे कभी तो आत्मा का विज्ञान’ तथा कभी ‘मन का विज्ञान' के रूप में ही परिभाषित किया जाता रहा। परन्तु वुण्ट ने इसे एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्थापित किया और इसे प्रयोगात्मक स्वरूप प्रदान किया। वुण्ट अनुसार “मनोविज्ञान एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक मनोविज्ञान है जिसमें तात्कालिक अनुभूतियों का अध्ययन किया जाता है।'' इसी आधार पर वुण्ट ने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा कि “मनोविज्ञान चेतन अनुभूति का विज्ञान है "। वुण्ट का समर्थन करते हुए विलियम जेम्स ने भी कहा कि ...मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा यह है कि यह चेतना की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन और व्याख्या कर सकता है"।

वुण्ट की परिभाषा को मनोविज्ञान की संरचनावादी परिभाषा कहा जाता है। अपने संरचनावादी मनोविज्ञान में वुण्ट ने मनोविज्ञान को न सिर्फ चेतना का विज्ञान माना वरन् चेतन अनुभवों के विश्लेषण को मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य माना तथा अन्तः निरीक्षण को चेतना के अध्ययन की विधि। फिर भी. वुण्ट की परिभाषा में कुछ कमियाँ रह गई जो निम्नवत् है-

1. मनोविज्ञान अनुभूति एवं व्यवहार दोनों का अध्ययन करता है।

2. मनोविज्ञान अनुभूति एवं व्यवहार का अध्ययन वातावरण के साथ समायोजन की दृष्टि से करता

है।

3. चूँकि यह प्राणियों के व्यवहार और अनुभूतियों का अध्ययन करता है, अतः सभी प्रकार के जीवित प्राणी, पशु और मनुष्य इसके अध्ययन -क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। अर्थात, मनोविज्ञान में पशु-पक्षी और मनुष्य दोनो का अध्ययन किया जाता है।

प्राणी की प्रत्येक क्रिया (व्यवहार एवं अनुभूति) वातावरण के साथ अभियोजन के लिए होती है इसलिए हाल के मनोवैज्ञानिकों ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है- ''मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान है जो प्राणी और वातावरण के बीच सम्पूर्ण अभियोजन से संबद्ध अनुभूतियों और व्यवहारों का अध्ययन करता है।"

इस परिभाषा में एक नई बात जोड़ी गई है- अभियोजन से संबंधित अनुभूति और व्यवहार। यह सही भी प्रतीत होता है, क्योंकि मनोविज्ञान व्यक्ति की क्रियाओं (मानसिक एवं शारीरिक) का अध्ययन वातावरण से पृथक रूप में नहीं करता। कोई भी मनुष्य 'शून्य' में नहीं रहता। यह चारों ओर से भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से घिरा रहता है। ये परिस्थितियाँ 'अत्यन्त जटिल स्वरूप की होती है तथा क्षण-प्रतिक्षण बदलती रहती है। इन परिवर्तनशील ही मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रतिक्रिया करता है ताकि इन परिवर्तनशील अवस्थाओं के साथ अभियोजन' स्थापित हो सके। इन्हीं अवस्थाओं को वातावरण कहते हैं, जिन्हें मोटे तौर पर दो भागों- 'आन्तरिक एवं बाह्रय' में बाँटा जाता है। 'आन्तरिक वातावरण' व्यक्ति के जैविक अवयवों की अवस्था को कहते हैं, जैसे रक्त रसायन में परिवर्तन होने पर भूख की अवस्था का उत्पन्न होना। इसी प्रकार प्यास की अवस्था, शारीरिक तापमान में परिवर्तन, विभिन्न ग्रंथियों के कार्यों में परिवर्तन आदि आंतरिक वातावरण के उदाहरण है। बाह्रा वातावरण व्यक्ति के बाहर की अवस्थाओं को कहते हैं, जैसे- मौसम (धूप, वर्षा, जाड़ा). प्राकृतिक वस्तुएँ एवं दूसरे जीवित प्राणी (पशु, पक्षी तथा अन्य व्यक्ति)। मनुष्य एवं अन्य प्राणी जब तक जीवित रहते हैं. वे सदा इन बाह्रा एवं आन्तरिक परिस्थितियों से प्राप्त उत्तेजनाओं को ग्रहण करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मनुष्य की प्रतिक्रियाएँ वातावरण के संपर्क को ग्रहण करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि मनुष्य की प्रतिक्रियाएँ वातावरण के संपर्क से प्राप्त उत्तेजनाओं के प्रति हुआ करती है। इसे 'सूत्र रूप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है-

अर्थात् प्राणी में अनुक्रिया की उत्पत्ति वातावरण की उत्तेजक परिस्थितियों एवं प्राणी की सम्मिलित क्रिया के फलस्वरूप होती है।

वातावरण से उत्तेजना को प्राणी द्वारा प्राप्त करने, उन्हें मानसिक रूप से संगठित करने और तब उनके

प्रति किसी प्रकार की अनुक्रिया करने की इस संपूर्ण प्रणाली को ही उत्तेजना प्राणी अनुक्रिया कहते

हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उत्तेजना प्राणी अनुक्रिया का उपर्युक्त सूत्र पर्याप्त नहीं है। इनकी राय में इस सूत्र में एक और पद का जोड़ा जाना अनिवार्य है। उत्तेजना प्राणी-अनुक्रिया सूत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि किसी उत्तेजना के प्रति प्राणी जैसे ही कोई अनुक्रिया करता है. प्राणी का व्यवहार वहीं समाप्त हो जाता है, लेकिन वस्तुतः ऐसे होता नहीं है। किसी उत्तेजना के प्रति प्राणी कोई अनुक्रिया करता तो उसमें उस अनुक्रिया की भी संवेदना होती है, जो पुनः एक नई उत्तेजना का काम करती है और जिसके प्रति भी प्राणी में अनुक्रिया होती है। इसे 'सांवेदिक फीडबैक' की संज्ञा दी जाती है। अतः, उपर्युक्त सूत्र में 'सांवेदिक फीडबैक को शामिल किया जाना आवश्यक है। सांवेदिक फीडबैक को शामिल करने पर इस सूत्र को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है उत्तेजना-

प्राणी-अनुक्रिया-सावेदिक फीडबैक।

वातावरण से प्राप्त उत्तेजनाओं के फलस्वरूप प्राणी के भीतर संगठनात्मक प्रक्रिया होती है जिससे वह प्रतिक्रिया या अनुक्रिया करता है। पुनः इस प्रतिक्रिया की भी संवेदनात्मक अनुभूति होती है जो फीडबैक' का काम करती है।, अर्थात् एक नई उत्तेजना मिलती है और प्राणी इस नई उत्तेजना के प्रति भी अनुक्रिया करता है। यही नई उत्तेजना सांवेदिक फीडबैक कहलाती है। इसे और अधिक स्पष्ट करने हेतु हम एक उदाहरण का सहारा लें - मान ले, आप एक मोटरगाड़ी चला रहे हैं। आपको पीछे से आती हुई एक दूसरी गाड़ी के हार्न की आवाज सुनाई पड़ती है। यहाँ हार्न की आवाज उत्तेजना है और प्राणी अपने अनुभव के आधार पर पार्श्वदर्शी ऐनक में देखने की क्रिया करता है। ऐनक में देखने पर उसे मालूम होता है कि कोई गाड़ी पीछे से उसकी गाड़ी से काफी निकट पहुँच चुकी है। प्राणी का यह अनुभव ही सांवेदिक फीडबैक' के रूप में एक नई उत्तेजना का काम करती है, जिसके फलस्वरूप वह एक्सिलेटर को जोर से दबाने की प्रतिक्रिया करता है और अपनी गाड़ी को जल्दी से आगे बढ़ा लेता है। स्पष्ट है कि हॉर्न की आवाज मिलने पर प्राणी की जो पहली प्रतिक्रिया हुई (ऐनक में देखने की क्रिया) उसका व्यवहार वहीं समाप्त नहीं हुआ, बल्कि ऐनक में पीछा करती हुई गाड़ी को देखने के फलस्वरूप 'सांवेदिक फीडबैक' के रूप में नई उत्तेजना मिलती है जिससे एक दूसरी प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती है।

मनोविज्ञान का क्षेत्र

प्रत्येक विज्ञान का अपना एक निश्चित लक्ष्य होता है। मनोविज्ञान के 'स्वरूप' एवं उसकी परिभाषा से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य मनुष्य की अनुभूतियों तथा व्यवहारों का उचित अध्ययन कर उन्हें सही रूप में समझना और उनका नियंत्रण करना है। मनोविज्ञान की सहायता से हम मनुष्यों के बारे में सही-सही ज्ञान प्राप्त कर न सिर्फ दूसरों को ही समझने की कोशिश करने हैं बल्कि अपने-आपको भी समझने में समर्थ होते हैं। यानी, मनोविज्ञान की सहायता से हम स्वयं के एवं दूसरों के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं, तथा अपने और दूसरों के व्यवहारों को आवश्यकतानुसार नियंत्रित करने में समर्थ होते हैं। इस नियंत्रण के फलस्वरूप हमें वातावरण की जटिल परिस्थितियों से अनुकूल अभियोजन स्थापित करने में पर्याप्त मदद मिलती है, जिससे व्यक्ति का जीवन सुखी हो जाता है।

मनोविज्ञान अपने उपर्युक्त लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु मानव के व्यवहारों से संबंधित समस्याओं एवं तथ्यों की खोज करने की दशा में अग्रसर है तथा इस दिशा में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान का क्षेत्र दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। जीवन के विविध पक्षों से लेकर सार्वभौम अभियोजन तक के विभिन्न तथ्यों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना इसका विषय बन गया है। इसी पृष्ठभूमि में मनोविज्ञान के कुछ प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख यहाँ किया जाएगा।

1) मानव के सफल अभियोजन में सहायक- मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र मानव-जीवन के सफल अभियोजन से संबंद्ध तथ्यों का अध्ययन करने से है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा हमें व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अभियोजन करने से संबद्ध ज्ञान की वृद्धि करने में सहायता मिलती है तथा इस तरह से प्राप्त ज्ञान के आधार पर मनुष्य अपने को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभियोजित करने में समर्थ होता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का ही यह परिणाम है कि आज हम व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक अभियोजन में होने वाली कठिनाइयों एवं उनके निराकरण के उपायों के बारे में जान पाए हैं तथा इनका उपयोग कर मानव- जीवन को अभियोजन योग्य बनाने में समर्थ हुए हैं। इस क्षेत्र में किए गए अध्ययनों से प्राप्त ज्ञान का भंडार इतना विशाल हो गया है कि इनके आधार पर आजकल मनोविज्ञान की अलग शाखाएँ विकसित हो चुकी हैं, जिन्हें क्रमशः असामान्य मनोविज्ञान एवं समाज मनोविज्ञान कहते हैं। असामान्य मनोविज्ञान के अंतर्गत असामान्यता के स्वरूप, कारण एवं उपचार के उपायों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार, व्यक्ति के अभियोजन-संबंधी कठिनाइयों का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन कर उन्हें पुनः अभियोजन के योग्य बनाया जाना संभव हो सका है। समाज मनोविज्ञान द्वारा व्यक्ति के सामाजिक अनुभवों एवं व्यवहारों का विश्लेषण किया जाता है तथा व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाने और उनके पारस्परिक संबंधों को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है। इस क्रम में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के बीच के संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं।

2) बालकों के विकासात्मक पहलुओं के अध्ययन एवं मार्गदर्शन में सहायक- मनोविज्ञान का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र 'बालकों के विकासात्मक पहलुओं का अध्ययन करने से है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों की मदद से हम बालकों के विकास में उत्पन्न कठिनाइयों या समस्याओं के कारणों का पता लगाते हैं तथा उचित विकास का मार्गदर्शन भी करते हैं। मनोवैज्ञानिक "बालकों के विकास की प्रक्रिया का गर्भावस्था से लेकर परिपक्वता की अवस्था तक अध्ययन करते हैं तथा इस संबंध में भविष्यवाणी करना, उनके व्यवहारों को उचित विकास हेतु नियंत्रित करना एवं सही मार्गदर्शन देना उनका मूल उद्देश्य होता है।

3) शिक्षा, व्यापार एवं अपराध के क्षेत्र में उपयोगी- आजकल मनोविज्ञान का प्रवेश शिक्षा, व्यापार कानून एवं अपराध इत्यादि क्षेत्रों में भी हो चुका है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक इन विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का अध्ययन करने एवं उनके समाधान के उपायों की खोज करने में प्रशंसनीय सफलता प्राप्त कर पाए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग कर आजकल बालकों को उनकी योग्यता एवं अभिरूचि के अनुसार शिक्षा देने का व्यवस्था होने लगी है तथा विभिन्न प्रकार की मानसिक त्रुटियों से पीड़ित बालकों के लिए उचित शिक्षा दी जाने लगी हैं इससे शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने में काफी सहायता मिली है।

4) उद्योग-धंधों में- मनोविज्ञान का उद्योग-धंधों के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के फलस्वरूप श्रम की बरबादी को रोकने में काफी सहायता मिली है। साथ ही साथ यह मनोवैज्ञानिक अध्ययन का ही परिणाम है कि आजकल कार्य के अनुसार व्यक्ति तथा व्यक्ति के 'अनुसार कार्य का चुनाव किया जाने लगा है। इससे श्रमिक एवं मालिक दोनों लाभान्वित हुए हैं। इनके अतिरिक्त औद्योगिक शांति की स्थापना, दुर्घटनाओं के मनोवैज्ञानिक कारणों का पता लगाकर नियंत्रित करने, मजदूरों की कार्यकुशलता को बढ़ाने एवं अन्य औद्योगिक समस्याओं के समाधान में भी मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से बहुत अधिक मदद मिलती है।

(5) जीवन के अन्य क्षेत्रों में- आज मनोविज्ञान का प्रवेश अभियंत्रण, चिकित्सा, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, युद्ध इत्यादि क्षेत्रों में भी हो चुका है तथा इन सभी क्षेत्रो में नए-नए शोधकार्य होने लगे हैं। इतना ही नहीं, आर्मी, क्रीड़ा, मनोरंजन आदि के क्षेत्रों में मनोविज्ञान नया मुकाम हासिल कर चुका है। प्रशासन तथा प्रबन्धन का तो आधार ही है मनोविज्ञान। मनोविज्ञान के क्षेत्र के संबंध में उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। मानव जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है, जहाँ मनोवैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो पा रहा हो अथवा इसका उपयोग न किया जाता हो। हालाँकि, मनोविज्ञान एक अत्यंत ही 'युवा विज्ञान' है, फिर भी इसका प्रवेश हमारे जीवन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में हो चुका है तथा विभिन्न क्षेत्रों में नए-नए अनुसंधान हो रहे हैं। । यही कारण है कि अब मनोविज्ञान की कई अलग शाखाएँ विकसित हो गई है। ये शाखाएँ सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों ही क्षेत्रों में मनोविज्ञान के विस्तार को प्रदर्शित करती है।

|  |  |
| --- | --- |
|  |  |